डाक पंजीयन संख्या - श्रीगंगानगर/105/2012-2014
आर. एन. आई - राजहिन/2003/9899
प्रकाशन दिनांक 1 अगस्त 2012 : मूल्य - पाँच रुपय

मासिक पत्रिका
अजायब बानी

वर्ष : दसवां | अंक : चौथा | अगस्त-2012

e-mail : dhanajaibs@yahoo.co.in
Website : www.ajaibbani.org

4 कृपाल दा विछोड़ा
(एक शब्द)

5 समय का सही इस्तेमाल
(महाराज कृपाल सिंह जी द्वारा एक संदेश)

9 चिन्ता
(स्वामी जी महाराज की बानी)
सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
(16 पी.एस. आश्रम राजस्थान)

संपादक
प्रेम प्रकाश छाबड़ा
099 50 55 66 71
098 71 50 19 99

उप संपादक
नन्दनी

विशेष सलाहकार
गुरमेल सिंह नौरिया
099 28 92 53 04

संपादकीय सहयोगी
परमजीत सिंह

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा के आदेशानुसार प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर, सन्त बानी आश्रम 16 पी.एस. वाया- मुकलावा, तहसील - रायसिंहनगर - 335 039 जिला श्रीगंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया।

- 125 -

कृपाल दा विछोड़ा

कृपाल दा विछोड़ा मेरी, हड्डियाँ नूं खा गया,
मंगया सी प्यार ते, विछोड़ा झोली तूं पा गया, (2)

दाता, भुल्लां तैनूं किवें कोई, माड़ी-मोटी गल्ल नहीं ,
भुल्लां तैनूं किवें कोई, माड़ी-मोटी गल्ल नहीं, (2)
मुड़-मुड़ नाम तेरा, बुल्लियाँ ते आ गया, मंगया सी प्यार .....

कीता तैनूं प्यार ओहदे, बदले च गम मिले, (3)
ज़िंदगी नूं गम, झोरा हड्डियाँ नूं खा गया, मंगया सी प्यार .....

सुणदा हाँ खड़ाक जदों, किसे दा मैं सच्ची-मुच्ची, (3)
लगदा है शायद मेरे, वेहड़े तुहिओं आ गया, मंगया सी प्यार .....

खोल कुंडी, तक 'अजायब' , खड़ाक जेहा होया कोई, (3)
करके तरस घर, कृपाल तां नहीं आ गया, मंगया सी प्यार .....

महाराज कृपाल सिंह जी द्वारा एक संदेश

समय का सही इस्तेमाल

सावन आश्रम, दिल्ली

हम यहाँ केवल भजन-सिमरन करने के लिए आए हैं। हम यहाँ नए दोस्त बनाने के लिए नहीं आए। यहाँ आकर हमें अपने देश, घर और रिश्तेदारों को भी भूल जाना चाहिए। हमारा इरादा केवल भजन-सिमरन करने का ही होना चाहिए। यहाँ आकर हमें अपना ज्यादा से ज्यादा समय भजन-सिमरन में बिताना चाहिए। आप जितनी देर यहाँ हैं अपने **समय का सही इस्तेमाल** करें।

अपना कीमती समय भजन-सिमरन में लगाकर आप सभी सन्त बन सकते हैं। यह समय बहुत कीमती है इसे छोटी-छोटी चीजों के लिए बेकार न करें। जब समय बीत जाएगा तब आप पछताएंगे अगर आप पाँच मिनट में शरीर छोड़ने वाले हैं तो आप अपने आपको कैसे बचा सकते हैं? आप अपने ख्यालों को हमेशा सिमरन में रखें।

परमात्मा रोशनी है, परमात्मा नाम है। परमात्मा लोगों को रोशनी दिखाने के लिए आता है जिसे हम खुद नहीं देख सकते, यह सब गुरु की ताकत का ही चमत्कार है।

परमात्मा आपके अंदर है। आप मन, कर्म और सोच से शुद्ध रहें। आप अपने काम से मतलब रखें अगर आपको कोई अनुभव होता है तो आप चुप रहें। उन्हीं लोगों की बात सुनें जो अंदर तक पहुँचे हुए हैं, दूसरों की बातें सुनने से आप कहीं नहीं पहुँच सकते।

आपको उस ताकत के दर्शन होने चाहिए। हर सन्त का बीता हुआ कल होता है और हर पापी का आने वाला कल होता है, यह सीधी सी बात है। मैं आपको समझाना चाहता हूँ कि एक आदमी उपदेश दे

सकता है कि वह रोशनी में है पर असलियत में वह अंधेरे में होता है। वही आदमी रोशनी के बारे में बता सकता है जिसने रोशनी को देखा है। आप अपना समय दुनियावी दोस्तों के बीच में बिताने की जगह पिता परमात्मा के साथ बिताएं जो आपको रोशनी दिखा सकता है।

राय सालीग्राम कहते हैं, ''यहाँ कितने पापी हैं? मैं उनमें सबसे बड़ा पापी हूँ।'' यह शब्द उनकी नम्रता दिखाते हैं। जो लोग जाग जाते हैं वे सन्त के दर्शन करते हैं। जो लोग सूर्योदय से तीन-चार घंटे पहले उठकर भजन-सिमरन करते हैं वे गुरु-परमात्मा के दर्शन का मजा उठाते हैं अगर आप सही हैं तो सारा संसार सही है। आप कह सकते हैं कि मेरे माता-पिता राजा महाराजा हैं अगर आपके पास 'नाम' नहीं है तो कुछ भी नहीं है। आप भजन-सिमरन करेंगे तो आपका प्रतिबिम्ब मेरे ऊपर पड़ेगा।

आप अंदर जाएं फिर अपने आपको देखें। सन्त हमेशा अंदर जुड़ने के लिए कहते हैं। परमात्मा आपके अंदर हैं बाहर नहीं। परमात्मा आपके अंदर है लेकिन आप बाहरी दुनिया की तरफ देख रहे हैं। आप लोग बाहर के मन्दिर में क्यों जाते हैं? आपको अपने अंदर के मन्दिर में आराधना करनी चाहिए।

सभी सन्त यही कहते हैं कि आप परमात्मा को अपने शरीर के अंदर ढूंढें। आपके शरीर के अंदर एक मन्दिर है। बाहरी मन्दिर तो केवल आपको दिशा दिखाने के लिए हैं। परमात्मा ने कहा, ''मैं आपका सच्चा छुपा हुआ खजाना हूँ आप अपने अंदर खोज करें मुझे पा लेंगे।'' दुनियावी चिह्नो का इस्तेमाल करते हुए अपने अंदर खोज करें और सच को ढूंढें।

जो भी गुरु या सन्त चाहे वे किसी भी जाति या धर्म के हों सबने हमें यही सिखाया है अगर आपके दोस्त अच्छे हैं तो आपके मन में धार्मिक या अच्छे विचार आएंगे अगर आपके दोस्त बुरे हैं तो आपके

मन में बुरे विचार आएंगे। ये ध्यान देने वाली बात है। अच्छे विचारों से आप अच्छी राह पर चलेंगे, आपको दूसरों से क्या लेना है?

आप सदैव अपने पर ध्यान दें, परमात्मा आपके अंदर है। आपके अंदर प्यार और 'नाम' का बीज है। आप जिस अमृत की बूंद के लिए इस दुनिया में आए हैं वह आपके अंदर है। जब आप परमात्मा के चरणों में आ गए हैं तो अपनी सारी चतुराई और दोहरेपन को छोड़ दें। रोम शहर के दो पुजारियों ने 'नामदान' लिया। उन्होंने पूछा कि अब उन्हें क्या करना चाहिए? मैंने उनसे कहा, ''चर्च आपको पैसे देता है, आप उनसे कहें कि यह परमात्मा का पंथ है।''

आप जैसे-जैसे आगे जाएंगे आपका मन स्थिर होता जाएगा। आप सिर्फ उसी की बात सुनें जो अंदर जाता है। गुरु आपको अंदर जाने का तरीका बताता है। आपके अंदर एक लहर है लेकिन यह तभी मुमकिन है जब आप सभी दुनियावी चीजें त्याग दें। आपको ध्यान देना है कि आपकी आँखें, कान और जुबान आपके अंदर बुरे विचार लाएंगे, इन्हें नियंत्रित करने की कोशिश करें। बत्तख हमेशा पानी में रहती है लेकिन अपने पंखों को भीगने नहीं देती। आपको भी ऐसा ही होना चाहिए दुनिया में रहते हुए दुनियावी न बनें।

यह मेरी घड़ी है। किसी ताकत ने इस घड़ी को पकड़ा हुआ है, वह ताकत मैं हूँ। आप जब गुरु के चरणों में बैठते हैं तो समझें कि आप परमात्मा के चरणों में बैठे हैं। आप और आपका गुरु एक ही बिस्तर पर सो रहे हैं लेकिन आप एक-दूसरे से बात नहीं कर रहे। जो लोग अंदर नहीं पहुँचे वे यहाँ-वहाँ की बातों को ही सही बताएंगे।

परमात्मा और गुरु ही आपके सच्चे दोस्त हैं। मन एक चालाक दोस्त है यह आपको धोखा देगा। आप मेरे पास आए हैं मैंने आपको अपने साथ नहीं परमात्मा के साथ जुड़ने के लिए कहा है। सभी सन्त अपने आपको सबसे बड़ा पापी कहते हैं।

गुरु अमरदास जी कहते हैं, ''कभी मैं एक गिरा हुआ इंसान था जब मुझे 'नामदान' मिला तब मैं परमात्मा के चरणों में आ गया।'' जो अपने आपको नीचा समझता है वही सबसे ऊँचा होता है। आप आग के पास बैठेंगे तो आपको गर्मी मिलेगी अगर आप किसी पवित्र इंसान के पास बैठेंगे तो आपको कुछ आराम मिलेगा। जिन्हें गुरु मिल जाता है उनके कर्म कट जाते हैं। वे अपने आपको दुनियादारी से अलग समझें अगर आप दुनियादारी नहीं छोड़ते तो यही समझा जाएगा कि आप सतगुरु से नहीं मिले हैं और आप इस मार्ग पर चलने के लिए तैयार नहीं हैं।

गुरु को परमात्मा की तरफ से कमीशन मिली होती है गुरु हम सबको सच्चखंड ले जा सकता है अगर हम साफ नहीं तो वह ऐसा नहीं करता। आप लोग मेरे काम को आसान करें, मैंने आपको साफ-सुथरा करना है। आप लोग डायरी रखें, भजन-सिमरन करें इससे मेरा काम आसान होगा।

आपका घर जल रहा है और आप यहाँ-वहाँ भाग रहे हैं। अपने आपको ढूंढने की कोशिश करें। बाहर की तरफ न देखकर अंदर की तरफ देखें। जो अपना दृष्टिकोण बदल लेते हैं वही कामयाब होते हैं फिर आप देखेंगे कि आप परमात्मा के पथ पर आगे बढ़ रहे हैं।

मैंने आपको सीधी और साधारण बात कही है। आप अपने **समय का सही इस्तेमाल** करें; मेरी बात मानने से आप अपना और मेरा काम आसान करेंगे। आप आज से ही अपना समय परमात्मा की डायरी में बिताएं अगर आप अपने ऊपर दया करेंगे तो मुझ पर दया करेंगे। क्या आप मेरी कही बातें मानने के लिए तैयार हैं?

***

चिन्ता

स्वामी जी महाराज की बानी

16 पी.एस.आश्रम, राजस्थान

साँस-साँस सिमरो गोबिन्द, मन अंतर की उतरै चिंत, (2)

1. *पूरे गुरु का सुन उपदेश, (2) पारब्रह्म निकट कर पेख, (2) साँस-साँस सिमरो.....*
2. *आस अनित त्यागो तरंग, (2) सन्त जनां की धूर मन मंग, (2) साँस-साँस सिमरो.....*
3. *आप छोड़ बेनती करो, (2) साध संग अग्न सागर तरो, (2) साँस-साँस सिमरो .....*
4. *हर धन के भर लेहो भंडार, (2) 'नानक' गुरु पूरे नमस्कार, (2) साँस-साँस सिमरो .....*

चाहे बेटा कितना ही नालायक या बुरा क्यों न हो फिर भी माता-पिता के दिल में ममता होती है, माता-पिता बच्चे की गलतियों को माफ करके उसे अपने घर में अपने चरणों में जगह देते हैं। हमारी आत्मा प्रभु परमात्मा की अंश है। जब से यह सतनाम से बिछुड़ी है इसने भैंस, घोड़े, साँप और दूसरी योनियों में शान्ति प्राप्त नहीं की।

आखिर जब परमात्मा रहम करता है तो इसे इंसान की योनि में भेजता है। इस योनि में आकर भी हम शान्ति प्राप्त नहीं कर सकते। सन्तों ने इसे शान्ति का देश नहीं मौत और पैदाईश का देश कहा है। जहाँ मौत-पैदाईश, बिछोड़ा-मिलाप, मैं-मेरी और मतलब ही मतलब है वहाँ शान्ति और प्यार किस तरह हो सकता

है? जब खास रूहों की पुकार परमात्मा तक पहुँचती है तो परमात्मा अपने प्यारे बच्चे सन्तों को इस संसार में भेजता है। ऐसा नहीं कि परमात्मा ने आज सन्त भेजे हैं, पहले नहीं भेजे थे या आगे कोई सन्त संसार में नहीं आएगा, यह रास्ता बंद नहीं होता। वह रहम का समुद्र सदा उछलता रहता है। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

जुग जुग पीढ़ी चली सतगुरु की जिन्हां गुरमुख नाम ध्याया।

जो कौमें यह कहती है कि किसी देहधारी गुरु की जरूरत नहीं उनके दिल में परमात्मा से मिलने का शौक पैदा नहीं हुआ, अभी उनका समय नहीं आया क्योंकि उनका खसम-खसाई मन होता है। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

जन परोपकारी आए जीआदान दे भक्ति लायण हर स्यों लैंण मिलाए।

परमात्मा परोपकार करने के लिए मालिक के प्यारे सन्तों को संसार में भेजता है। जब तक परमात्मा का हुक्म होता है उन्हें मौला जिस भी हाल में रखे वे उतना समय परमात्मा का उपदेश आत्माओं तक पहुँचाते हैं और अपनी तरफ से कुछ भी नहीं कहते। वे वही कहते हैं जो उनसे उनका परमात्मा गुरु कहलवाता है। उन्हें अंदर से प्रभु का जो हुक्म आता है वे बाहर वही बोलते हैं अगर वे अपनी तरफ से कुछ कहें तो उन्हें बहुत पाप लगता है।

सन्त-महात्माओं की बानियां किस्से कहानियाँ नहीं होते। उन्होंने बानियां इसलिए नहीं लिखी कि आप इनके गाने बना लें, गाने गाकर दो-चार मिनट बाद हट जाएं और पहले जो करते हैं वही करते रहें। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

कथड़ियां सन्ताहे से सिखाए पंदियां।

सन्तों की लेखनियां उन्हें रास आती हैं जो उनके बताए रास्ते पर चलते हैं। जो यहाँ धोती झाड़कर अपने घर चले जाते हैं उन्हें

न तो इन लेखनियों पर यकीन आता है और न ही वे इनसे फायदा उठा सकते हैं। सन्तों की लेखनियों के एक-एक लफ्ज़ का मूल्य हम करोड़ों रूपये में भी नहीं दे सकते। उन्होंने ये लेखनियां उस समय लिखी जब उन्होंने अपने मन के साथ संघर्ष किया और अपनी आत्मा को मन के पंजे से आजाद करके सच्चखंड ले गए।

जब रहम का समुंद्र उछला तो उन्होंने हम पर तरस खाकर ये लेखनियां लिखी। हम भूले हुए जीव रोज निन्दा-चुगली करते हैं। अभी गुरमेल ने जिस महात्मा का शब्द पढ़ा है उन्हें गैर-मनुखी कष्ट दिए गए। जीते-जी किसी भी महात्मा को आराम से नहीं बैठने दिया गया लेकिन हम उनके जाने के बाद उनके नाम पर अस्पताल बनवा देते हैं, सोने के कलश चढ़ा देते हैं और बड़े-बड़े लंगर चलाना शुरू कर देते हैं।

जीवित पितृ न माने कोई मुए श्राद्ध कराही।

जीते जी तो हम महात्मा को आराम से बैठने नहीं देते लेकिन जब महात्मा संसार छोड़ जाते हैं तो उन्हें सोने की धरती या संगमरमर से क्या फायदा होगा? अगर कोई आपके नाम पर सोने का कलश चढ़ाकर सोने का मन्दिर बनवा दे लेकिन आपको उसके अंदर न जाने दे तो क्या आपको कोई आनन्द आएगा? यह सब हम अपनी मान-बड़ाई के लिए करते हैं। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैंः

साँस-साँस सिमरो गोबिन्द।

आप साँस-साँस सिमरन करें क्योंकि हम सभी को सिमरन करने की आदत पड़ी हुई है। हमारा मन दिन-रात जो कल्पनाएं करता रहता है उसे सिमरन कहते हैं। मन अच्छी बुरी दोनों तरह की कल्पनाएं करता है, यह सारा दिन टिकता नहीं है। जिस तरह

फासफोरस की आग को आम लोग भूतों की अग्नि भी कह देते हैं। यह आग हवा की रगड़ से कभी जल जाती है तो कभी बुझ जाती है। इसी तरह दीपक की लौ टिकती नहीं चाहे हवा हो या न हो। मंदिर चारों तरफ से बंद होता है लौ फिर भी हिलती रहती है। गुरुद्वारे या राजधानी के ऊपर झंडा होता है; हवा न भी हो यह फिर भी थोड़ा बहुत हरकत करता रहता है।

उसी तरह हमारा मन न सोते हुए टिकता है न जागते हुए टिकता है। सन्त हमारी इस कमजोरी को जानते हैं कि ये जीव किस बीमारी के शिकार हैं और इसका ईलाज क्या है? परमात्मा ने उन्हें अंदर से ही ज्ञान दिया होता है इसलिए वे हमें डेमोंस्ट्रेशन देने के लिए बाहर की मर्यादा पूरी करते हैं, वे पूर्ण गुरु के चरणों में श्रद्धा से बैठते हैं; अपने गुरु के हुक्म का पालन करते हैं।

सन्त कहते हैं कि आपके लिए सिमरन करना क्या मुश्किल है? सिमरन की आदत तो आपको पड़ी हुई है। सन्त हमें अपना कमाया हुआ सिमरन देते हैं। सिमरन धुनात्मक नाम से जुड़ने का जरिया है। सिमरन का मतलब आत्मा को नौं द्वारों से निकालकर आँखों के पीछे लाना है। हम जब तक एकाग्रचित होकर सिमरन नहीं करते हमारी आत्मा तीसरे तिल पर एकाग्र नहीं होती। यह जब तक नौं द्वारों में से नहीं निकलेगी 'शब्द' को कैसे पकड़ेगी।

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''जब आपका साँस ऊपर जाता है आप सिमरन करें और जब साँस नीचे आता है तब भी सिमरन करें लेकिन हम दिन-रात **चिन्ता** का सिमरन करने में लगे हुए हैं।'' कबीर साहब कहते हैं:

कोई महल न सूना होय।

चिन्ता के बिना कोई शरीर सूना नहीं है। चाहे परमात्मा ने हमें सारी दुनियां का सोना-चाँदी, नेक औलाद और नेक स्त्री दी हो फिर भी हम संतुष्ट नहीं होते क्योंकि हमें यह सब छिनने का और बाल-बच्चों के बगावत करने का डर लगा रहता है। आप देख लें! बुजुर्गों की यही हालत है।

सन्त कहते हैं कि उस **चिन्ता** से बचने के लिए आपके गुरु ने आपको जो 'नाम' दिया है उस नाम का सिमरन करें। जब साँस ऊपर जाए तो उस नाम का सिमरन करें जब साँस नीचे आए तब भी उस नाम का सिमरन करें।

शुरु में मुझे बाबा बिशनदास जी से 'दो-शब्द' का भेद मिला था। मैं उन दिनों हे राम! हे गोबिन्द! का जाप किया करता था। मेरी विल पावर इतनी मजबूत हो गई थी कि यह नाम भुलाए नहीं भूलता था। आर्मी में यह कायदा है कि शुरू में रंगरूट जब चलें तो कदम के साथ लेफ्ट-राइट भी बोलें ताकि उन्हे यह आदत हो जाए। उस समय मेरे मुंह से हे राम! हे गोबिन्द! ही निकलता था।

एक बार हमारे कंपनी कमांडर ने सुन लिया और उसने सबको रूकने के लिए कहा। कमांडर ने कहा कि मैं आपको एक और लेफ्ट-राइट सुनवाता हूँ। उसने मुझे सबके आगे चलने के लिए कहा। मैं उसी धुन में था अगर मैं उस धुन में न होता तो उससे डरकर चुप रहता या लेफ्ट-राइट कहता। मैं जब अगली तरफ चला तो मेरे मुँह में हे राम! हे गोबिन्द! ही चल रहा था। कमांडर ने मुझसे कहा, ''क्या यह गुरुद्वारा है? तू यहाँ परेड करने के लिए आया है।'' उसने कुछ दिन देखा आखिर मेरी परेड माफ कर दी। मेरे कहने का भाव हमारा सिमरन इस तरह का हो। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैंः

साँस-साँस सिमरो गोबिन्द मन अंतर की उतरे चिंत।

आपके मन के अंदर दिन-रात जो **चिन्ता** है कि यह कैसे होगा? चिन्ता चिता के बराबर है। चिन्ता करने वाला दिन में कई बार मरता है। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैंः

नानक चिन्ता मत करो चिन्ता तिसही हे।

आप कहते हैं **जिसने आपको पैदा किया है क्या उसे आपकी कोई चिन्ता नहीं? अगर हम उससे जुड़े हुए हों तो हमें पता हो कि हमारी चिन्ता करने वाला कोई और है। जब हम अपनी चिन्ता अपने आप करते हैं तो वह भी हमारी तरफ से बेखबर हो जाता है।** बच्चा सोया हुआ है माता अपने काम में मस्त है, बच्चा रोता है तो माता उसकी संभाल करती है। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैंः

आस अनित त्यागो तरंग, सन्त जना की धूर मन मंग।

आप कहते हैं कि आप अपने मन की तरंगो को छोड़ दें। आप अपने अंदर ये तरंगे उठा रहे हैं कि मेरा यह काम हो जाए वह काम हो जाए। हम इस तरह की भक्ति करते हैं कोई कहता है कि मेरी औलाद हो जाए। कोई कहता है कि मेरी औलाद नेक हो जाए। कोई कहता है कि मेरा कारोबार ठीक हो जाए।

राजस्थान में लोग साँप की पूजा करते हैं। वे साँप की पूजा इसलिए नहीं करते कि उनका साँप के साथ प्यार होता है; उससे डरते हैं कि कहीं ये हमारे घर के किसी सदस्य को काट न ले! अब आप देख लें कि साँप का किसके साथ प्यार है?

मुझे कुछ दिन गाँव किल्लेयावाली में रहने का मौका मिला। वहाँ मेरे नज़दीक ही कुछ लोग साँप की पूजा किया करते थे। एक आदमी सुबह ही वहाँ आकर बैठ जाता, औरतें साँप की पूजा करने

के लिए घर से सेवियां व अन्य सामान लेकर आती। एक मियाँ-बीवी का घर मेरे सामने ही था। वे भी प्रेमवश होकर सेवियां लेकर चलने लगे तो उस जगह साँप प्रकट हो गया। उन दोनों ने सेवियों को रखकर सबसे पहले साँप की मरम्मत की। मैं शोर मचाता रहा कि तुम तो इसकी पूजा करने जा रहे हो। हम परमात्मा की भक्ति इस तरह करते हैं जैसे राजस्थान के लोग साँप की पूजा करते हैं।

गुरु साहब कहते कि आप मन की इन तरंगो को छोड़ दें। दुनियां की आशा छोड़कर मालिक की आशा रखें। हम बाहर की धूल को भी नमस्कार करते हैं क्योंकि बाहर की धूल नहीं मिलेगी तो अंदर पता ही नहीं लगेगा, आशा ही नहीं उठेगी। असली धूल वह है कि आप नौं द्वारे खाली करके आँखों के पीछे आएं फिर आप उसे नूर कह लें, धूल कह लें या प्रकाश कह लें। आप अपनी कला छोड़ दें कि मैं कुछ हूँ। जब हम कहते हैं कि मेरे आसरे ही गाड़ी चल रही है तब हम दुखी होते हैं, हममें अहंकार आ जाता है। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैंः

आप छोड़ बेनती करो, साध संग अग्न सागर तरो।

हम अपने आपको तब छोड़ते हैं जब आत्मा से स्थूल, सूक्ष्म और कारण के पर्दें उतारकर ब्रह्म में चले जाते हैं। जब हम मन और आत्मा की गाँठ खोल लेते हैं तो मैं से बच जाते हैं, पारब्रह्म में पहुँचें जहाँ प्रकाश है नूर है।

दान करते हुए भी मन साथ है सोचते हैं कि मैंने दान किया है। नाम जपते हुए भी मन साथ है सोचते हैं कि मैं नाम जप रहा हूँ। सतसंग में जाते हैं तो मन कहता है कि मैं सतसंग में जाता हूँ।

हर सन्त ने चाहे वह मुसलमानों में चाहे हिन्दुओं में हुआ है उसने इस आग के सागर का जिक्र किया है। जो प्राणी यहाँ बुरे

कर्म करते हैं मन की बात मानते हैं उन्हें आग के सागर से गुजारा जाता है अगर आप उस सागर को आसानी से पार करना चाहते हैं तो किसी पूर्ण गुरु के पास जाएं वह आपको रास्ता देगा।

जे पेंडे लूटे दुरचारी।

ऐसे लोगों को जिस रास्ते से भेजा जाता है वह सन्तों के सेवको का रास्ता नहीं है। हम पूरे गुरु को नमस्कार करते हैं कि जो उसका कहना मानकर उसके बेड़े में सवार हो गए। वह हमें इस आग के सागर और दुनियां की मैं-मेरी से बचाकर ले गया।

गुरु बेचारा क्या करे जे सिक्खन में चूक।

अगर हम सतसंग में गए वहाँ जो कुछ सुना वहीं छोड़ आए तो सोचकर देखें कि ये किस्से कहानियां ही रह जाती है। गुरु अर्जुनदेव जी के इस छोटे से शब्द में हजारों पोथियों का निचोड़ है। स्वामी जी महाराज भी यही उपदेश करते हैं, ध्यान से सुनें:

हंसनी छानो दूध और पानी।। हंसनी छानो दूध और पानी।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''परमात्मा की तरफ से हंस की चोंच में यह तासीर होती है अगर वह लस्सी में चोंच डालता है तो दूध और छाछ अलग हो जाते हैं।'' सन्त-महात्मा हमें कहते हैं कि हे आत्मा! दुनियां के विषय-विकार, शराब-कबाब को छोड़ो। आपके अंदर अमृत का सागर है उसे पिएं उसके अंदर शान्ति, तृप्ति है।

मैं बताया करता हूँ कि जब हम सन्तों के कहने के मुताबिक 'शब्द-नाम' की कमाई करके अंदर जाते हैं तो हमारी विचारधारा बदल जाती है। जिस तरह अब हम दुनियां के खट्टे-मीठे रस छोड़ने को तैयार नहीं फिर सतसंगी से भी यही आशा रखी जाती है कि अब वह विषय-विकारों, शराबो-कबाबों में लिप्त नहीं होगा।

शुरू-शुरू में मेरे पास बलवन्त आई, उस समय यह बहुत छोटी थी; इसे खाना बनाने का बहुत शौक था। यह थाली में कई कटोरियां लगाकर लाती। मुझे आदत थी कि मैं थाली में खाना एक तरफ निकाल लेता आखिर हमारा संघर्ष चलता रहा। एक दिन मैंने कहा, ''बेटी! यह मेरे बस में नहीं है। मैं इतने खानों को देखकर कुम्हला जाता हूँ। मैंने भूखा रहकर अपने मुँह का स्वाद बिगाड़ा हुआ है।'' मैं सतसंग में बताया करता हूँः

अन्न न खाया स्वाद गँवाया।

कई प्रेमी मुझसे कहते कि कभी-कभी आपकी सेहत बहुत अच्छी होती है, कभी-कभी आप कमजोर दिखाई देते हैं। मैं जब 'दो-शब्द' का अभ्यास करता था तब मैं कई बार हफ्ता-हफ्ता खाना छोड़ देता था। मेरे पास एक सेवक रहता था वह पशुओं की बहुत अच्छी संभाल करता था, चाहे इंसान भूखा-प्यासा रहे। हरबंस ने उस प्रेमी को समझाया कि इंसान की भी सेवा करनी चाहिए। अब आप सोचकर देख लें! जिसमें ऐसे गुण थे उसने मुझे कितना खाना खिलाया होगा? लेकिन मैं उससे बहुत खुश था।

आपके पास हरबंस बैठा है आप इससे पूछ लें अगर ये लोग प्रसाद, खीर या चावल बनाते तो एक बड़ी परात भरकर रख लेते और कहते कि हम गोतकनाला करते हैं। मुझे तो इनके इस लफ्ज़ का मतलब भी पता नहीं था कि ये गोतकनाला किसे कहते हैं? मैं इन्हें देखता कि इन्होंने इतना कुछ खाना लेकिन मेरे लिए बस! ऐसा नहीं कि ये मुझे देते नहीं थे लेकिन मैं इन्हें देखकर खुश था। जब आपके मुँह का स्वाद ही ऐसा हो गया फिर आप जायके कहाँ लगाएंगे? भजन करना खाला जी का बाड़ा नहीं है।

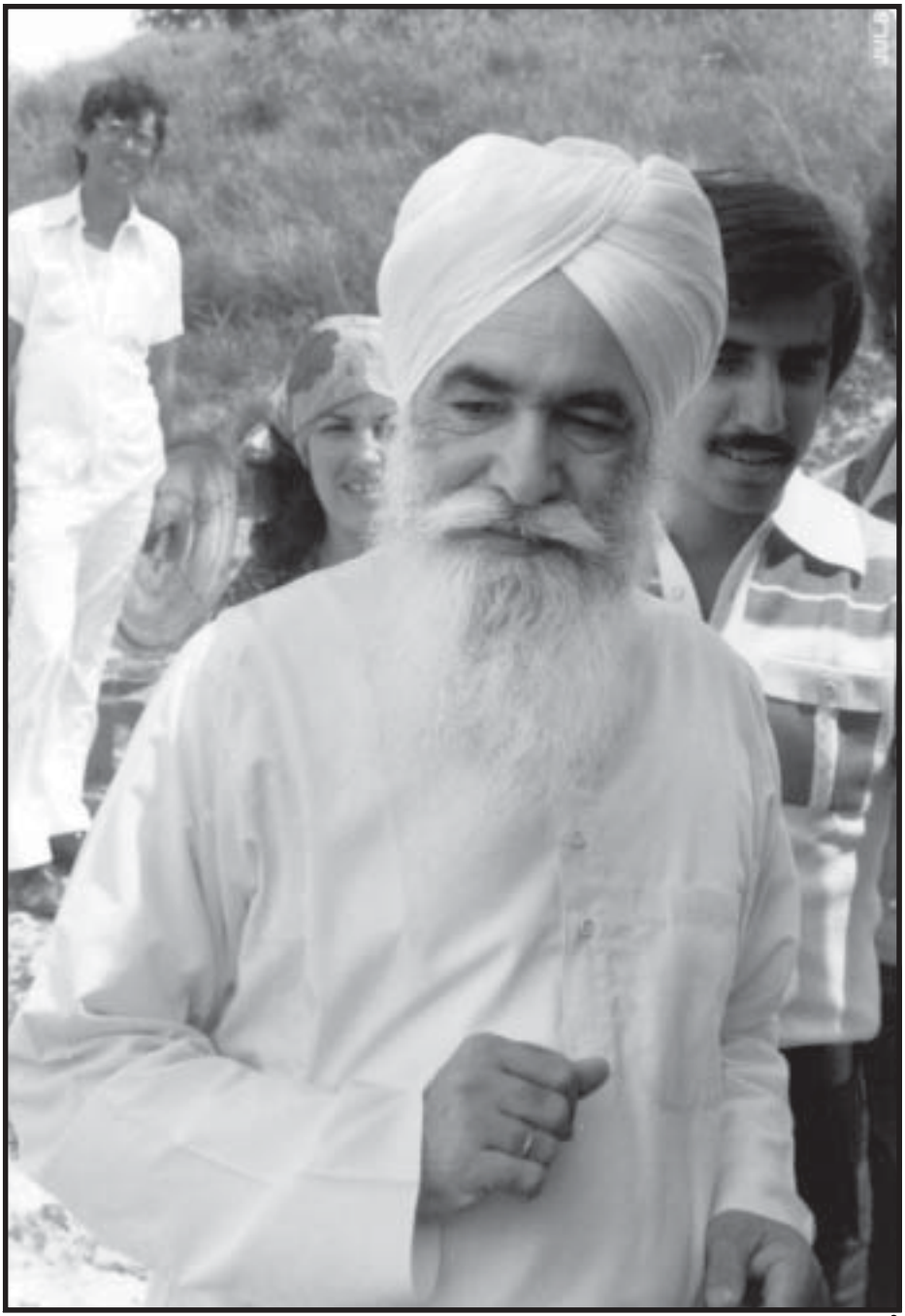

मुझे महाराज सावन सिंह जी का खाना देखने का मौका मिला है आप बहुत सादा खाना खाते थे। यह महाराज कृपाल की ही दया थी कि मुझे आपके साथ खाना खाने का काफी मौका मिला है। आप बहुत सादा खाना खाते थे, आम आदमी ऐसा सादा खाना कम ही खा सकते हैं क्योंकि हम हर बात पर नुख्स निकालते हैं। मैंने कई बुजुर्ग देखें है और अपने पिता को भी देखा है वह खाना खाते हुए नुख्स निकालते कि यह ठीक नहीं बनाया। परिवार के सदस्य नाराज होते तो मैं कहता कि यह सलूणा लगाता है, इससे खाना स्वाद बन जाता है।

मैं कई लड़कियों से सवाल करता हूँ कि तुम्हारे घर में खाने की निन्दा करते हैं तो क्या तुम खाना दोबारा बनाती हो? वे कहती है नहीं जी कभी घर में दोबारा खाना बना है? वही खा लेते हैं। आप सोचें! जिनकी ऐसी हालत है क्या उनका भजन बनेगा? क्या उनके अंदर वैसा रस आयेगा? महाराज सावन सिंह कहा करते थेः

जैसा खाईऐ अन्न वैसा होए मन।

प्यारे बच्चों! आप हर निवाले के साथ सिमरन करें। खाना खाते हुए आपके अंदर सतगुरु का ध्यान हो, जुबान पर सतगुरु का नाम हो तो जब वह खाना आपके अंदर जायेगा तो देखें! आपको उस खाने में कितना रस आयेगा, आपका ख्याल किसी तरफ नहीं जाएगा। आपका यह खास उपदेश होता था कि खाना खाते समय आप हर तरफ से ख्याल को हटाकर सिमरन की तरफ लगाएं। सबसे पहले सतपुरुष कुलमालिक गुरु को भोग लगवाएं। जब आपने गुरु को भोग लगवा लिया तो वह खाना प्रसाद हो गया अगर आप प्रसाद में नुख्स निकालते हैं तो आप पाखंड करते हैं। जब वह सतपुरुष का भोग हो गया तो आप उसमें कैसे नुख्स निकालेंगे?

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''दुनियां के खट्टे-मीठे विषय-विकारों के रस पानी हैं आप इन्हें छोड़ें और दूध 'शब्द-नाम' की कमाई करें; यह पिएं इसमें तृप्ति है।''

छोड़ो नीर पियो पय सारा। निस दिन रहो अघानी।।

आप प्यार से कहते हैं, ''विषय-विकारों के रस फीके हैं। देखने में लगता है कि विषय-विकारों में बहुत आनन्द है हम इन्हें भोगेंगे लेकिन ये हमें भोग लेते हैं। ये भोग इंसान को इस तरह खोखला बना देते हैं जैसे हरमोनियम बीच में से खोखला होता है। आप इन्हें छोड़ दें अंदर अमृत है उसे पिएंगे तो सारा दिन मस्ती चढ़ी रहेगी वह उतरेगी नहीं।''

जब बाबर ने गुरु नानकदेव जी समेत कई लोगों को पकड़कर जेल में डाल दिया, वहां सभी लोगों से आटे की चक्की चलवाई जाती थी। तब किसी ने बाबर को बताया कि आपने दूसरे लोगों के साथ एक पूर्ण सन्त को कैद कर लिया है। दूसरे लोग हाथ से चक्की पीस रहे हैं लेकिन वह पूर्ण सन्त आँखें बंद करके गहरे ध्यान में बैठा हुआ है वह बहुत नशे में हैं उसकी चक्की अपने आप चल रही है। मैंने आपको बताया था कि आर्मी में मेरी यही हालत थी।

बाबर को अपनी गलती का एहसास हुआ। जब उसने गुरु नानकदेव जी को गहरे ध्यान में देखा तो कहा, ''महाराज जी! मुझे माफ करें?'' उसने गुरु नानकदेव जी को भांग पेश की कि यह आपको और नशा देगी। गुरु नानकदेव जी ने कहाः

पोस्त अफीम भंग उतर जाए प्रभात,
नाम खुमारी नानका चढ़ी रहे दिन-रात।

मैं उदासियों में रहा हूँ। मैं जब किसी से पूछता कि बाबा! तू शराब क्यों पीता है, भांग क्यों खाता है? तो वह कहता कि इससे लिव लगती है। उस समय मुझे पता नहीं था मैं सोचता शायद! ये ठीक कह रहे हैं। मैं जब बाबा बिशनदास के पास गया तो आपने कहा, ''बेटा! कभी लिव भांग या तंबाकू पीने से लगी है? लिव नाम जपने से अंदर जाकर परमात्मा से लगती है।'' लोगों ने खुद ऐब करने और अपने ऐबों को छिपाने के लिए ऐसी कहानियां बना रखी हैं। बाहर के नशे घड़ी दो घड़ी के होते हैं फिर टूट जाते है।

हमारा बूढ़ा नाना कहता है कि अमली दिन में कई बार मरता है क्योंकि यह खुद नशा किया करता था। अब आप देख लें! शराब पीने वालों का अफीम खाने वालों का नशा न टूटे तो वे ठेके की तरफ क्यों जाएंगे? उन्होंने नशे की कहानियां गढ़ी होती हैं।

आमतौर पर ट्रेन या बस में सफर करें तो कई अपनी दवाईयों की मशहूरी करते हैं। सामान बेचने वाले होका लगाकर कहते हैं कि मैं फलानी कंपनी का यह काम करता हूँ। आजकल शराब वाले भी आ जाते है। वे ये कहते हैं कि जो शराब नहीं छोड़ता उसे बिना बताए ही शराब छुड़वाएं। उसने पास ही पानी और शराब भी रखी होती है पानी में जहरीली दवाई डाली होती वह कीड़ा पकड़कर उस पानी मे डाल देता है। कहता है कि आपके अंदर ऐसी शराब जाती है कि कीड़े मर जाते हैं। मैंने अभी इसमें कीड़ा डाला जो मर गया है क्योंकि उनकी भी कहानियां गढ़ी होती है। पास ही एक मियां-बीवी बैठे थे। बीवी डाक्टर के पास ईलाज करवाने गई थी, डाक्टर ने कहा कि तेरे पेट में कीड़े हैं। मियाँ ने कहा, ''तू रोज मेरे साथ शराब के पीछे लड़ती है देख! शराब में कितने गुण हैं अगर तू भी रोज पेग लगाए तो तेरे पेट के कीड़े मर जाएं।''

सन्त कहते हैं कि शराब हमारी जिंदगी को खोखला कर देती है। कई साल पहले मैं इंग्लैंड गया वहाँ किसी शराबी ने दीवारो पर बहुत बड़े-बड़े इश्तिहार लगवाए हुए थे। उन इश्तिहारों पर लिखा हुआ था कि मैं शराब से हार मान गया हूँ। शराब पीने से मेरे फेफड़े गल गए हैं। मेरा जो हुआ सो हुआ कम से कम और लोग शिक्षा लें। प्यारेयो! नशे हमें खा जाते हैं नशों से हमारी सोचने की शक्ति पर असर पड़ता है।

जैसे हम शीशा देखते हैं शीशे के साथ हमारे चेहरे की किरणें टकराती हैं अगर हम रोते हैं तो हमें अपना चेहरा रोता हुआ नज़र आएगा अगर हँसते हैं तो हँसता हुआ नज़र आएगा। हमारा कोई अंग-भंग है तो वह उसी तरह नज़र आएगा; शीशे ने न हमारा कोई अंग-भंग किया होता है न हमें रूलाया होता है जैसी हमारी शक्ल है शीशे में वैसी ही दिखाई देती है। हम दुनियादार लोग सन्तों को अपने ख्याल से परखते हैं।

जाकी होय भावना जैसी हर मूरत देखी तिन तैसी।

इसी तरह सन्त-महात्मा शीशे की तरह होते हैं। जैसे हमारे अपने ख्याल होते हैं उनके साथ टकराकर वैसे ही नज़र आते हैं।

संगत में ऐसे भी प्रेमी बैठे होते हैं जो मस्त होते हैं जिन्हें आस-पास का ज्ञान नहीं होता। वे वहाँ नूर प्रकाश देखते हैं। एक बार महाराज जी गंगानगर में सतसंग दे रहे थे। महाराज जी ने कबीर साहब की जगह पलटू साहब का नाम ले दिया। आप जानते हैं कि महाराज कृपाल पढ़े-लिखे विद्वान थे। कुछ आदमियों ने मेरे पास आकर कहा कि महाराज जी ने कबीर साहब की जगह पलटू साहब का नाम ले दिया जबकि बानी तो कबीर साहब की है। महाराज जी ने एक घंटे तक जो कुछ बोला वह उन्हें याद नहीं गलती से कबीर साहब की जगह पलटू साहब बोल दिया तो हम उसी को पकड़कर बैठ गए। सोचकर देखें! ऐसे लोग क्या कमा लेंगे? मैंने उन्हें गुरु नानकदेव जी की यह बात कहीः

जिन अंदर प्रीत प्रेम दी ज्यों बोलण तिवें सुहन।

भाई! हमें तो इस बात का पता नहीं लगा आप जो बोल गए हमें तो सुंदर ही लगे। परमात्मा प्रेम रूप है। प्रेम दुनियां या धन-दौलत का नहीं उनके अंदर परमात्मा का प्यार है। हम लोग प्रेम लफ्ज़ से भी धोखा खाते हैं।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''आपके अंदर नाम का अमृत है उसमें नशा है। आप एक बार उस अमृत से जुड़ेंगे फिर वह उतरेगा नहीं। दुनियां के विषय-विकार पानी हैं अभी पिओ तो सुबह उतर जाऐंगे।''

जुक्ति जतन से घट में बैठो। सुरत शब्द समानी।।

स्वामी जी महाराज कहते है, ''आप पूर्ण महात्मा के पास जाएं वह जो युक्ति बताता है उस पर चलें। उसकी युक्ति सुनी सुनाई या किताबों में से पढ़ी हुई नहीं होती। उसने खुद जिंदगी में प्रेक्टिकल किया होता है।'' इसलिए मैं कहा करता हूँ कि किसी महात्मा के चरणों में जाने से पहले उसकी जिंदगी जरूर पढ़ें। जिन्होंने महात्मा के साथ जिंदगी बिताई होती है आप उनके साथ बैठकर बात करें कि इनका जीवन कैसा है? तो पता लगता है कि बचपन से ही इनका झुकाव परमात्मा की तरफ होता है।

हमारे लाला जी और दर्शन सिंह मेरे साथ चालीस साल से हैं। इन लोगों को सारी सहूलियते थी इनके बच्चे थे पत्नियां थी। अगर ये लोग भी मेरे साथ ही बैठते तो क्या नहीं प्राप्त कर सकते थे। मैं इनसे कहता कि आओ बैठो लेकिन अपने आप कमाना खाना बहुत मुश्किल होता है। दर्शन की हालत यह थी कि लोगों ने इसे दूध पिलाना और यह अरदास करता, ''तेरी लाडली फौजें समुद्र छक रही हैं।''

सोचकर देखें! एक आदमी गायों को चारा डालता है सारा दिन उसका गोबर उठाता है, वह तो महाराज का लाडला नहीं हुआ और जो आदमी गायों का गोबर न उठाए उन्हें चारा न डाले और धूप से छाया में न करे वह महाराज का लाडला हो गया? एक दिन दर्शन सिंह ने मुझसे पूछा, ''क्या मैं यह पुण्य करता हूँ या पाप?'' प्रेमी सच भी बोल लेते हैं। मैंने कहा, ''मैं तुझे क्या बताऊँ तू खुद ही फैसला कर ले।'' समझ आई तो इसने ऐसा करना छोड़ दिया।

मैं जब 77 आर.बी. में था। इनको आदत थी कि प्रसाद बनाते, प्रेमियों को थोड़ा-थोड़ा प्रसाद देकर बाकी बचे हुए प्रसाद की कड़ाही उठाकर घर ले जाते। दर्शन सिंह प्रसाद बनाने वाला और पाठी

खाने वाला होता था। मैंने इन्हे कहा कि जो बचा है मेरे बैठे हुए यही पर बाँट दो। वहाँ इनका एक प्रेमी आया उसने सुबह तो पेट भरकर खा लिया फिर सोचा कि शाम को भी खाकर जाऊँगा।

मैंने इन्हें महाराज सावन के समय की कहानी सुनाई कि आपके पास एक बग्गा बैल था जो रास्ते के बीच बैठ जाता था, खुद तो काम नहीं करता था और दूसरों को भी काम नहीं करने देता था। एक दिन वह चारों टाँगे पसारकर रास्ते के बीच ही बैठ गया। प्रेमियों ने आकर महाराज सावन सिंह से कहा कि बग्गा बैल रास्ते में ही बैठ गया है। महाराज सावन ने आकर उस बैल से कहा, ''देख प्यारेया! अब तो तुझे काम करना ही पड़ेगा, तुझे आरा मारने वाले ये वही लोग हैं जिन्हें तू प्रसाद रख रखकर खिलाता था।'' मैंने इन प्रेमियों को ऐसी कहानियां सुनाकर धीरे-धीरे हटाया कि ऐसा मत किया करो; जैसा संगत खाए वैसा ही तुम भी खाओ।

मेरा कहने का भाव आप किसी का खाने से पहले करोड़ बार सोचें। अपना खर्च घटा लें। अन्न-पानी अच्छे तरीके से कमाएं और अपनी कमाई में से लंगर में भी सेवा डालें ताकि प्रेमी उससे फायदा उठा सकें। लंगर में सेवा डालने का मतलब यह है कि हमारी कमाई सफल हो जाए, लंगर हमारे आसरे नहीं चलता।

अंग्रेजो ने मुझसे सवाल किया कि लंगर की कोई सेवा बताएं? मैंने उनसे कहा कि अभी तो लंगर मेरे गुरु सावन-कृपाल का है जब अजायब का हो तो लंगर में सेवा डाल देना। महाराज ने मुझसे कहा था, ''बेटा! रात को बर्तन उल्टे करके रख देना जिसकी संगत है सुबह वह अपने आप ही डाल देगा।'' जहाँ पर ऐसी बरकतें हैं वहाँ न आप लंगर चलाने के योग्य हैं और न मैं ही।

मैं अभी पश्चिम में गया। गुरमेल मेरे साथ था। वहाँ बहुत संगत आई थी। प्रेमियों ने संगत के लिए बहुत अच्छा इंतजाम किया हुआ था। मैं वहाँ छः सात दिन रहा। हर रोज नए से नया खाना अच्छे डब्बों में पैक किया हुआ था कि हमारे गुरु ने आना है संगत गुरु को प्यारी है; जब संगत खाएगी तो हमारा गुरु खुश होगा। क्या उन्हें परमात्मा कृपाल खुशी नहीं देगें क्या उनकी कमाई पवित्र नहीं करेंगे, क्या उन लोगों का भजन नहीं बनेगा?

आप सोचें! पश्चिम में किसी के पास समय ही नहीं वहाँ उन लोगों ने अपने घर के कारोबार छोड़कर पंद्रह दिन पहले सेवा के लिए कमर कसी। उनको सेवा करते हुए देखकर दिल खुश होता था। प्यारेयो! हमने गुरु की खुशी लेनी होती है।

स्वामी जी महाराज कहते हैं कि आप सबसे पहले सन्तों के पास जाएं। सन्त कहते हैं, ''आप सिमरन करें, सिमरन करने से आपकी जुबान पवित्र होगी। नेक कमाई करें आपका तन-मन पवित्र होगा। जिसने जिंदगी में कभी भजन-सिमरन नहीं किया वह आपको क्या युक्ति बताएगा?''

अवरे को उपदेश दे मुख में पड़ हे रेत,
रास बिरानी राख ते खाया घर का खेत।

महाराज सावन सिंह जी हमेशा कहा करते थे कि सतसंग करने से पहले एक घंटा अभ्यास में बैठें। महाराज कृपाल सतसंग मुलतवी कर देते लेकिन अभ्यास को मुलतवी नहीं करते थे। जिसने अभ्यास किया होता है वह जानता है। आप महात्मा की बताई युक्ति के मुताबिक अभ्यास में बैठें और नौं द्वारे खाली करके तीसरे तिल पर एकाग्र हों।

खान पान निद्रा तज आलस। सुन ले अधर कहानी।

अभ्यासी को नींद तंग करती है, आलस आता है फिर भजन कर लेंगे। जिस मन ने आपको आज यह सलाह दी है कल भी वही मन आपके पास होगा। अभ्यासी रात को कम खाते हैं। हम या तो खाना बिल्कुल ही छोड़ देते हैं जिससे सेहत खराब हो जाती है या इतना ज्यादा खा लेते हैं कि फिर चूर्ण के लिए भी जगह नहीं रहती।

मैंने पहले माँझूवास में जगह ली थी। वहाँ मेरा एक प्रेमी था हमने उसे प्रसाद, खीर खाना खिलाया फिर बाल्टी भरकर दे दी कि यह बाल्टी फलाने आदमी को दे देना। वह वहाँ से चल पड़ा लेकिन उसके दिल में ख्याल आया कि मैं बाल्टी उठाकर कहाँ ले जा रहा हूँ? उसने हमारे आश्रम के पास ही बैठकर सारा कुछ खा लिया। वह पहले ही पेट भरकर खा चुका था फिर हाथ-पैर फैलाकर वहीं लेट गया। मुझे किसी प्रेमी ने आकर बताया कि आपके दरवाजे पर एक आदमी मरा पड़ा है। मैंने जाकर उसे बुलाया, ''क्यों कैसा है?'' उसने कहा, ''क्या बताऊं अब तो मालिक के ही आसरे हूँ।'' मैंने उससे कहा, ''चूर्ण लाऊँ।'' उसने कहा, ''अब चूर्ण भाए कोनी।'' हमने उसके घर संदेश भेजा कि आपका बूढ़ा यहाँ पर पड़ा है आप इसे गाड़ी में डालकर ले जाएं।

खाने वाले प्रेमियों ने हमें यहाँ तक तजुर्बा करवाया है कि वे इतना खा लेते हैं कि आँखों से दिखाई देना बंद हो जाता है। यहाँ सतसंग में भी बैठे हैं ये कहने लगे कि वह हमारे साथ बोलता था हमारा बुरा चाहता था आँखों से अंधा हो गया है। पंद्रह दिन के बाद वह मेरे पास आया मैंने पूछा, ''मैंने सुना है कि तू बोलता बोलता अंधा हो गया था तुझे किसी डाक्टर से सलाह लेनी थी?'' उसने कहा, ''वह मेरी अपनी समस्या थी, मैं एक शादी में गया वहाँ अच्छा अन्न-पानी बना हुआ था मैंने ज्यादा खा लिया जब

मिर्चों का ग्वार ऊपर चढ़ा तो मुझे दिखाई देना बंद हो गया।'' जबकि वह यह दावा करता है कि मैं बहुत भजन करता हूँ। आप सोचकर देखें! क्या ऐसे बंदे की सुरत लग जाएगी? हम लोगों की बातें करते हैं हो सकता है हमारे अंदर इससे भी ज्यादा कमियां हों। सन्तों की बानी किसी खास के लिए नहीं यह सबके लिए है।

मैं बताया करता हूँ कि हम गंगानगर में बैठे थे। मैंने आगरा वाले सन्त का यह काम देखा कि जो प्रेमी आए वह उसके साथ खाने लग जाए। मुझे पहले से ही ऐसी आदत नहीं थी। मैं जब खाना खाने लगा तो आगरे वाले सन्त ने कहा, ''तुम मेरे साथ खाना क्यों नहीं खाते?'' मैंने कहा, ''मुझे इस तरह की आदत नहीं है।'' मैंने महाराज सावन सिंह जी का उपदेश सुना हुआ था जिसमें आप कहते हैं कि मेरे बच्चे पास में बैठे हैं आप इनसे पूछ लें मैंने सारी जिंदगी अपने बच्चों को अपने साथ खाना नहीं खिलाया।

मैंने थोड़ा सा खाना खाया तो उस सन्त ने कहा कि तुमने तो सन्तों को लाज लगा दी। मैंने भयभीत होकर पूछा, ''क्या मैंने कोई नुकसान कर दिया?'' उन्होंने कहा कि मैं तो अभी ठीक-ठाक ही हूँ और तू खाना खाकर हट गया है। वह आठ पहर बाद खाना खाता था, मैं चार पहर बाद खाना खाता था लेकिन वह बात करता तो उसके मुँह से बदबू आती थी।

थोड़े दिनां दा रखदे लोग रोजा, आशिक उम्र भर सिदक नवांवदे।

मैं कहा करता हूँ कि आप संयम रखकर खाना खाएं। मालिक के प्यारे संयम रखते हैं। संयम में रहना, भूखे रहना या दोगुना खाना कोई और चीज़ है। हमारे यहाँ एक पंडित था वह मंगलवार का व्रत रखता था लेकिन कहता अगर तुम चूरी खिलाओ तो मैं व्रत खोल लूंगा। मेरी माता ने घी और मीठा डालकर उसके लिए चूरी

बनानी। आप सोचें! हम इंसान ऐसे हैं कि अगर चूरी मिल गई, खीर मिल गई तो पेट भरकर खा लेना है नहीं तो व्रत है।

हमारे घर में एक कुत्ता था। मैंने उस कुत्ते की कहानी कई बार सुनाई है कि वह मंगलवार का व्रत रखता था, वह कुत्ता तो मंगलवार को नहीं खाता था। प्यारेयो! हमें व्रत का महत्त्व भी समझना चाहिए कि व्रत क्या है? व्रत संयम है। थोड़ा खाएं थोड़ा खाने से हमारी सेहत तंदरूस्त रहेगी और विचार पवित्र रहेंगे।

फिर औसर नहिं हाथ पड़ेगा। भरमो चारों खानी।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''जब आप खान-पान और नींद पर कंट्रोल करेंगे तो ऊपर परमात्मा की दरगाह से जो आवाज आ रही है वह आपको सुनाई देगी। आप उसे कहानी, धुन, आवाज, गुरबानी या अकथकथा कह सकते हैं। हमें इंसान का जामा बहुत अच्छा अवसर मिला है यह बार-बार नहीं मिलेगा।''

एक-एक योनि में कितनी-कितनी लम्बी उम्र है। ऋषियों-मुनियों ने चौरासी लाख किस्म की योनियों का औसत लगाकर बताया है कि तीस लाख किस्म के पेड़ हैं, सत्ताईस लाख किस्म के कीड़-पतंगे हैं, चौदह लाख किस्म के पक्षी हैं, नौं लाख किस्म के जल के जीव हैं, चार लाख किस्म के देवी-देवता, भूत-प्रेत, इंसान, हैवान वगैरहा हैं। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैंः

जम जम मरे मरे फिर जम्में बहुत सजाय पया देश लम्में।

चौरासी लाख योनियों का चक्कर बहुत लम्बा है, कभी मर गया कभी पैदा हो गया। इंसान का जामा होश करने का भक्ति करके परमात्मा के साथ मिलाप करने का है अगर इसे गँवा दिया तो फिर दुनियां में बार-बार साँप, कीड़े-पतंगे बनकर ही आना है।

गुरु का कहना मान सखी री। देत सिखापन जानी।

हमने किसका कहना मानना है, कौन हमारा सच्चा मित्र हैं; कौन हमसे बेलाग प्यार करता है? जिन्होंने हमें 'नाम' दिया है। उन्हें आप गुरु, सन्त, मित्र कुछ भी कह लें। कबीर साहब कहते हैंः

दिल का महरम कोई न मिलया जो मिलया सो गरजी।

हम सभी का गरज का रिश्ता है अगर हमारे किसी रिश्तेदार, भाई बहन के पास अच्छा ओहदा है उसके पास चार पैसे हैं तो हम उसके साथ आस-पास की रिश्तेदारी बना लेते हैं अगर उसके पास धन-पदार्थ या ओहदा नहीं तो अपने को भी पराया कह देते हैं। सोचकर देखें! अगर किसी के पास कुर्सी आ जाती है जिनका वह रिश्तेदार नहीं वह भी कह देते हैं कि यह हमारा रिश्तेदार है, जब कुर्सी हाथ से निकल जाती है तो उसके खास रिश्तेदार भी कहते हैं कि मैं तो ऐसे ही उसके साथ घूमता था। गुरु तेगबहादुर कहते हैंः

ये जग मीत न देखयो कोई।

हमने यहाँ किसी का कोई मित्र नहीं देखा मित्र तो वही है जिन्होंने हमें 'नाम' दिया है; वह यहाँ भी और आगे भी हमारे साथ बेगरज प्यार करते हैं। फर्ज करो रात का वक्त है हमें किसी ने घेरा हुआ है, हमें जान का खतरा है अगर उस समय कोई बचाव वाला मिल जाए तो हमें कितनी खुशी होगी।

इस तरह एक ऐसा भी दिन आता है जब आत्मा को यमदूतों का सामना करना पड़ता है। यम पकड़ लेते हैं उस समय जो हमारी सहायता करे वही हमारा असली मित्र है। 'नाम' दे देना दो लफ्ज बताना ही नहीं होता। गुरु वही है जो शिष्य की संभाल करे। नाम लेने के बाद अगर शिष्य शराबों-कबाबों और चुगली निन्दा करता

है वह फिर कहे कि गुरु मेरे पास तो आया नहीं उसका कोई हल नहीं लेकिन गुरु फिर भी दयालु है अगर बाहर मौज नहीं बरताएगा तो अंड में जाकर संभाल करता है। वह अपने बच्चे को यमों के हवाले नहीं होने देगा।

गुरु सदा आपको अच्छी शिक्षा देगा। जिस तरह माता जानती है अगर बच्चा आग में हाथ डालेगा तो हाथ जल जाएगा। बच्चे को साँप सुंदर लगता है, बच्चा साँप को हाथ में पकड़ना चाहता है लेकिन माता जानती है अगर यह साँप को पकड़ेगा तो साँप उसे डंक मार देगा; उसे बच्चे की चीख पुकार की परवाह नहीं। इसी तरह सतसंग करते हुए सन्त किसी की परवाह नहीं करते कि लोग क्या कहेंगे? जो मालिक कहता है सन्त वही कहते हैं।

सन्त कहते हैं कि हम किस तरह हाथ से साँप को पकड़ते हैं? विषय-विकार भोगना यही चीज़े हैं। आप सन्तों का कहना मानें। वे दिन-रात आपको कहते हैं, ''प्यारेयो! यह जीवन बहुत अमूल्य है इसमें भजन करें, आज का काम कल पर मत छोड़ें।''

पाँचो इन्द्री उलटी तानो। इच्छा मार भवानी।।

हमारी पाँच कर्म इन्द्रियां हैं और पाँच ज्ञान इन्द्रियां हैं। आप इन इन्द्रियों को उलट लें। आँखों की इन्द्री बाहर की दुनियां के रूप को देखकर शान्त नहीं होती; बाहर के लोगों के अच्छे-बुरे रूप देखती है आप इसे उलट लें। भाई गुरदास जी कहते हैं:

अंखियां देख न रजिया बहो रंग तमाशे।

अपनी पत्नी पर सब्र नहीं औरों के पीछे फिरते हैं। ठंडे दिल से सोचने वाली बात है इन्हें उलट लें ताकि ये अंदर गुरु के स्वरूप को देखें। कान बाहर के रागों पर जाते हैं, खट्टे-मीठे रागों को

सुनते हैं अंदर 'शब्द' के राग को सुने। जुबान सारा दिन खट्टे-मीठे रसों पर लगी है अंदर अमृत का रस चखे। इच्छा देवी शक्ति हमारे अंदर बार-बार इस दुनियां की इच्छा पैदा करती है फिर दुनिया में लाती है इसे बाहर निकाल दें; अंदर 'नाम' है।

ऐह मन उलट सनातन होया।

मन को साध चढ़ो गगनापुर। सुनो अनाहद बानी।।

आप प्यार से कहते हैं, ''जब आप इन इन्द्रियों को उलट लेंगे तो आपके मन की साधना शुरू हो जाएगी। जब इसे बाहर से हटाकर सिमरन के जरिए आँखों के पीछे लाकर 'शब्द' के साथ जोड़ लेते हैं यही मन की साधना है। मन की साधना करने से पहले तन की साधना है। किसी के साथ कोई बुरा कर्म न करना ही तन की साधना है।'' सिक्ख इतिहास में आता हैः

तिल घांड़ी दी पीड़ तो डरे जे कर, कौन पूछदा ऐ विच बाजार ओहनू।
कंघी हड चराए न नाल आरी, करे कौन सीस ते असवार ओहनूं।
सीधा जाण तो शेर जे रूक जावे, कौन आखदा मर्द दिलेर ओहनूं।
सिक्ख हो के धर्म नू लीक लावे, मुँह लावे न गुरु करतार ओहनूं।

गुरु साहब ने कड़े का मतलब समझाया है कि बुराई न कर। हिलता हुआ हाथ बताता है कि तेरे हाथ में सिक्खी की हथकड़ी लगी हुई है। तू किसी की फसल मत उजाड़। किसी की चोरी न कर। तू कंघे से शिक्षा ले कि कंघा सिर पर क्यों चढ़ा! इसने अपने शरीर को आरे से चिरवाया है तभी इसको मान प्राप्त हुआ है अगर तूने भी परमात्मा से मिलना है तो तू भी कंघी की तरह बन।

किसी भी महात्मा ने बुरी शिक्षा नहीं दी लेकिन हम उनकी शिक्षा को भूल जाते हैं परमात्मा फिर और महात्मा को भेजता है वह उसी शिक्षा को ताजा कर जाते है।

शोर होत तेरे घट के भीतर। तू क्यों रहे अलसानी।

अब आप कहते हैं, ''तेरे घट के अंदर परमात्मा के शब्द का शोर हो रहा है; परमात्मा खुद तेरे अंदर बैठा आवाज दे रहा है। तू क्यों आलस करता है क्यों बाहर ढूंढता फिरता है? चीज हमारे घट के अंदर है हम उसकी खोज बाहर करेंगे तो वह कैसे मिलेगी? आप अंदर जाकर निर्णय करके देख लें। तिल के अंदर तेल है, पत्थर के अंदर अग्नि है इसी तरह परमात्मा आपके अंदर है।''

राधास्वामी टेरत तो को। कह कर अमृत बानी।।

स्वामी जी महाराज ने हमें थोड़ी सी लाइनों में बड़े प्यार से समझाया कि महात्माओं की बानियां अमृत से भरी हैं। जो इन पर अमल करते हैं वे अपना जीवन बना लेते हैं। जिन लोगों ने इन्हें गाना या रोजगार बनाया हुआ है उनके लिए किस्से कहानियां हैं।

धृग तिन्हां का जीवया जो लिख लिख वेचे नाँव,
खेती जिनकी उजड़ी खलवाड़े क्या थाँव।

आजकल बहुत पेट प्रचारक पैदा हुए हैं। हजरत बाहु कहते हैः

हाफिज हिफज कर करन तक्कबर करन मुल्ला वडयाई हू।
सावन माह दे बदलां वांगू फिरन किताबां चाई हू।
जित्थे देखण चंगा चोखा ओत्थे पढ़न कलाम सवाई हू।
ओह दोई जहाने मुड्डे बाहु जिन्हा खाद्दी वेच कमाई हू।

स्वामी जी महाराज ने हमें बहुत प्यार से समझाया है कि हमने 'शब्द-नाम' की कमाई करनी है दुनियां के विषय-विकारों के पानी को छोड़ना है और अंदर जाकर नाम अमृत को पीना है। हमें भी चाहिए कि हम अपना जीवन पवित्र बनाएं। परमात्मा ने हमें इंसान के जामें का मौका दिया है, इससे फायदा उठाएं।

***

धन्य अजायब

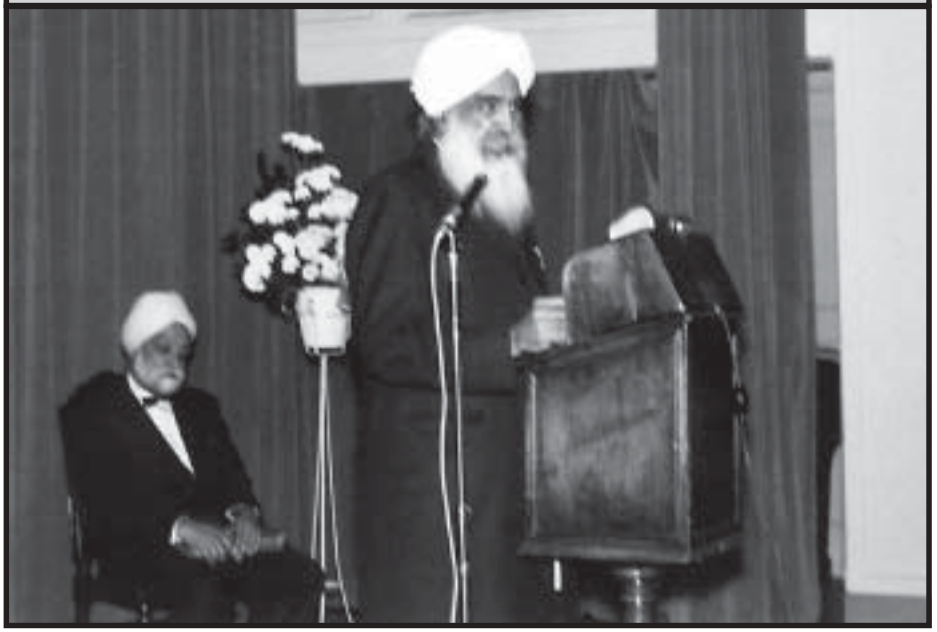

गुरु प्यारी साध संगत

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की दया से 16 पी.एस. आश्रम में सतसंगो का कार्यक्रम इस प्रकार है:

7, 8, 9, 10, 11	सितम्बर 2012
26, 27, 28	अक्टूबर 2012
23, 24, 25	नवम्बर 2012
28, 29, 30	दिसम्बर 2012

मासिक पत्रिका से संबधित पत्र व्यवहार के लिए कृपया नीचे लिखे पते पर संपर्क करें:

सन्तबानी आश्रम

16 पी.एस. वाया - मुकलावा
तहसील - रायसिंहनगर - 335 039
जिला श्रीगंगानगर (राजस्थान)